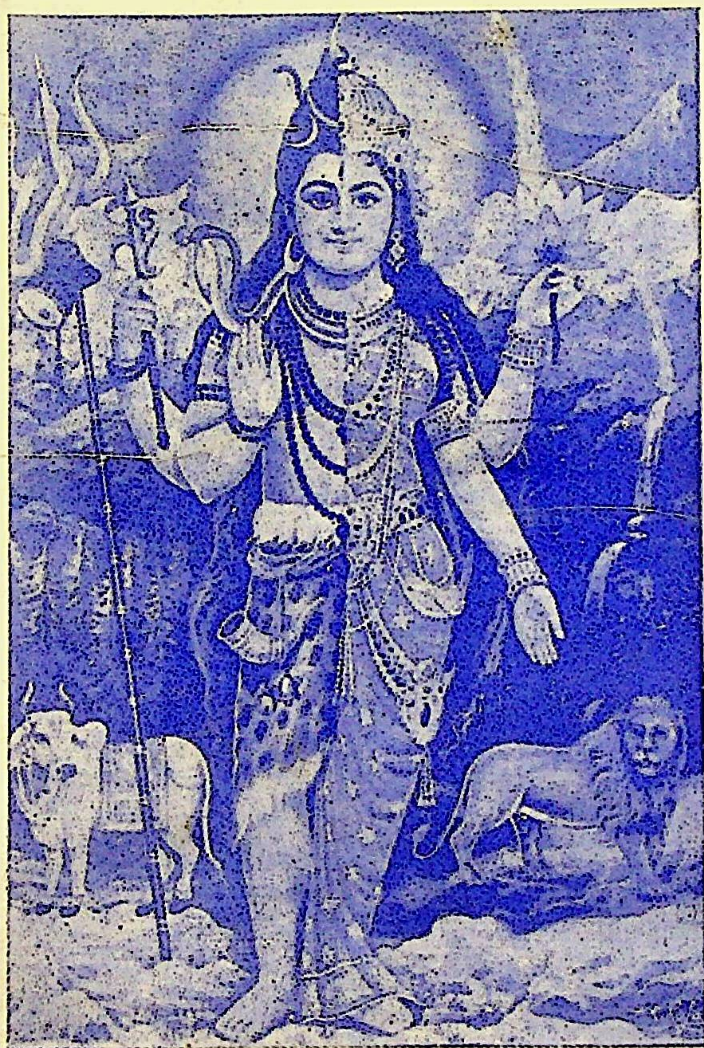
☆ चाक्षुष-फलम् ☆

(शशीन्दु सम्बलितम्)



डॉ० इन्दुनाथ शर्मा-प्रणीतम्

PRACHYABHARATI GRANTHMALA

Vol–2

CHAKSHUṢA PHALAṂ

(Sasheendu Sampalitaṃ)



Writen and Indu Sanskrit Commentary by

Dr. INDUNĀTHA SĀRMA

Lecturor in Phalit Jyotisa

Deptt. In Jyotisa

Sampoornanand Sanskrit University, VARANASI



THE SHASHI HINDI COMMENTARY

By

Smt. SASHIKALA SHARMA

M. A., B. Ed.



Shree Rajrajeshwari Prachya Pashchatya Vidya Sansthan

V A R A N A S I

1989

Published by :

Shree RajRajeshwari Prachya Pashchatya Vidya Sansthan

B. 27/54–1 Durgakund, VARANASI–5

© Writers

Available at :

Publisher and Writer

First Edition—1000 Copies

Price Rs. 15–00

Printed by :

Sattanam Printing Press

S. 1/208, Naibasti Sarnath Road, VARANASI–2

प्राच्यभारती-ग्रन्थमालायाः-द्वितीयपुष्पम्

श्री जानकी वल्लभो विजयते

चाक्षुष-फलम्

शशीन्दुसम्वलितम्



लेखकः इन्दुसंस्कृतव्याख्याकारश्च

डॉ० इन्दुनाथ शर्मा

प्राध्यापकः फलितज्यौतिषस्य

ज्यौतिषविभागे

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः वाराणसी



शशि हिन्दी व्याख्याकर्त्री

श्रीमती शशिकला शर्मा

एम० ए०, बी० एड्०



श्री राजराजेश्वरी-प्राच्य पाश्चात्य विद्या संस्थान

वाराणस्याम्

२०४६ तमे वैक्रमाब्दे १९११ तमे शकाब्दे १९८९ तमे खैस्ताब्दे

प्रकाशक :

श्री राजराजेश्वरी प्राच्यपाश्चात्यविद्याप्रकाशन

बी० २७/५४-१, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी ।

लेखकाधीनः सर्वाधिकारसुरक्षितः

प्राप्तिस्थले

१—प्रकाशकेभ्यः

२—शशीन्दु कुटीर, जे० ११/४४ नईबस्ती ईश्वरगंगी, वाराणसी ।

प्रथमावृत्तिः—१००० प्रतिरूपाणि

मूल्यम्—१५=००

मुद्रक :

सत्तनाम प्रिंटिंग प्रेस

एस. १/२०८, नईबस्ती, पाण्डेयपुर, सारनाथ रोड, वाराणसी ।

आचार्य करुणापति त्रिपाठी

अध्यक्षः उत्तर प्रदेश संस्कृताकादम्याः

पूर्वं कुलपतिश्च—सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयस्य वाराणसीस्थस्य

डॉ॰ श्री इन्दुनाथ शर्ममहाभागः सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयस्य ज्योतिषविभागे प्राध्यापकः स्वकीयामिमां लघुकृतिं चाक्षुपफलनामिकां विदुषां ज्योतिर्विद्याविदां पुरस्तात्प्रस्तौति।

अयं खलु लेखकः वाराणसेयस्य प्रसिद्धस्य ज्योतिर्विदां कुलस्य योग्यो ज्योतिषशास्त्रमर्मज्ञो विचक्षणो विद्यते। अस्य परिवारे पूर्वपूर्वपुरुषेभ्यः पितृ-पितामह-प्रपितामहप्रभृतिभ्यः परम्परागतं ज्योतिषशास्त्रं निरन्तरं प्रवहति। अस्य पूर्वपुरुषाः सर्वे अखिलभारतीयां प्रतिष्ठां भजमानाः परमविख्याता नक्षत्रविद्याविचक्षणा आसन्।

मन्ये स्वकुले नवोदितइन्दुवदयमिन्दुनाथः स्वकीयप्रतिभाकौमुद्याः प्रकाशितान्नवनवाञ्ज्योतिषशास्त्रग्रन्थाल्लिखित्वा स्वकुलधारां चकासयिष्यते।

शुभाशंसी

करुणापति त्रिपाठी

डॉ० राजदेव मिश्र

कुलपति

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

भारतीय मनीषियों ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जो कुछ चिन्तन मनन किया है वह सब संस्कृत वाङ्मय की अमूल्य निधि के रूप में विद्यमान है। परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि उससे हमें जो लाभ मिलना चाहिये, वह हमें प्राप्त नहीं हो सका। समाज में एक ऐसी धारणा घर कर गयी है कि विज्ञान के क्षेत्र में भारतवर्ष का कोई योगदान नहीं है। आज स्वतन्त्र भारत में आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी ज्ञान-विज्ञान की पुरानी थाती के रहस्य का उद्घाटन करें। वस्तु स्थिति यह है कि पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की पृष्ठभूमि नितान्त भौतिक है, जब कि भारतवर्ष के ज्ञान-विज्ञान के मूल में भौतिकता और आध्यात्मिकता दोनों का पुट है। भारतीय ज्योतिर्विज्ञान के तीनों क्षेत्रों (गणित, सिद्धान्त तथा फलित) में हमारे पूर्वजों ने महत्वपूर्ण कार्य किया है।

जहाँ तक भारतीय जौतिष का सम्वन्ध है उसकी आधार शिला प्रकाश विज्ञान है और उसे केन्द्रित कर सारे ग्रहों की स्थिति विशेष से जनित फलों का विवेचन किया गया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि ज्योतिष विज्ञान के अन्य अंगों के साथ ही भारतीय ज्योतिष का सम्यग् ऊहापोह पूर्वक चिन्तन किया जाय। दुःख है कि

अभी तक इस दिशा में अपेक्षित कार्य नहीं हो सका है। फलतः अमूल्य निधिभूत फलित ज्योतिष का अनेक सन्दर्भ हमारे लिये अज्ञात है।

डॉ० इन्दुनाथ शर्मा, प्राध्यापक (फलित) ज्योतिष विभाग ने 'चाक्षुष फलम्'' नामक पुस्तक की रचना कर इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। इनकी पत्नी श्रीमती शशिकला शर्मा के द्वारा उस ग्रन्थ के किए गये हिन्दी अनुवाद ने उक्त पुस्तक की उपयोगिता बढ़ा दी है। मैंने पुस्तक का अवलोकन किया। उसमें पदे-पदे लेखक के अध्यवसाय फलित ज्योतिष विषयक ज्ञान और मौलिकता के दर्शन होते है। मुझे विश्वास है कि उक्त पुस्तक भारतीय फलित ज्योतिष के क्षेत्र में महनीय स्थान की भागी बनेगी एवं विद्वानों को समाकृष्ट कर इस दिशा में प्रवृत्त होने की प्रेरणा देगी। एतदर्थ डॉ० शर्मा बधाई के पात्र हैं।

दि० १९-१०-८९

डा० राजदेव मिश्र
कुलपति

विद्यावारिधि श्री कृष्णचन्द्र द्विवेदी

आचार्य एवं अध्यक्ष, ज्योतिष-विभाग तथा वेदवेदाङ्गसंकायाध्यक्ष
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी

१. ज्यौतिषशास्त्र प्रकाशजन्य प्रभाव का शास्त्र है। प्राणिमात्र के लिये जीवन का सर्वप्रथम अनुभूति विज्ञान है। आकाशीय तारा-ग्रह-उपग्रह-पुच्छल ताराओं के कारण जो भूमण्डल में अघटित घटनायें हुई उनका अनुभव तत्त्ववेत्ता ऋषि मुनियों ने किया और इस अन्वेषण में सतत जागरूक होकर प्रकाश-शास्त्र के सिद्धान्तों को निश्चित किया।

प्रथम फलित ज्यौतिष के घटित घटनाओं के कारण ही सिद्धान्त ज्यौतिषशास्त्र (खगोलविज्ञान शास्त्र) का प्रादुर्भाव हुआ है।

अतएव स्कन्धत्रयात्मक सिद्धान्त-होरा-संहिता ज्यौतिषशास्त्र की सत्य घटनाओं का आकलन करके उसकी घोषणा तभी की जा सकती है जब सिद्धान्त गणितीय आधार पर पुनः पुनः संशोधित हो।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।।

२. प्रस्तुत पुस्तक चाक्षुषफलम् इसी का प्रत्यक्ष प्रमाण है। यह बहुत ही उत्तम संयोग है कि डॉ० शर्मा सदम्पति ज्यौतिषशास्त्र के

ज्ञाता हैं और दोनों अन्वेषण की ओर अग्रसर हैं। ऐसा संयोग पुराकाल में था। किन्तु इधर की शतब्दियों में यह ज्ञान का दुर्लभ संयोग है।

इस उत्तम कृति को देखने पर ये दोनों अतीव सराहना एवं हार्दिक वधाई के योग्य हैं।

३. सामान्य जन के ज्यौतिष ज्ञान के लिये यह पुस्तक परम उपयोगी और सहज सरल सुबोधगम्य है।

इन्दु संस्कृत टीका और शशि हिन्दी टीका इस ग्रन्थ के रहस्य-पिटारी को सहज खोलकर प्रत्यक्ष रख रहे हैं।

विषय का सङ्कलन इस छोटी पुस्तक में बड़े यत्न से सजाकर रखा गया है। इसमें प्रायः मानव जीवन से सम्वन्धित सभी विषय उपलब्ध है।

४. डॉ० इन्दुनाथ शर्मा सं० सं० वि० वि० वाराणणी के ज्यौतिष-विभाग के प्रसिद्ध प्राध्यापक फलित ज्यौतिषशास्त्र के विज्ञ हैं। इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हैं।

यह भी लघु पुस्तिका ज्यौतिष जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत है जनता लाभान्वित होगी ही।

५. मैं डॉ० इन्दुनाथ शर्मा तथा इनकी सहयोगिनी धर्मपत्नी श्रीमती शशिकला शर्मा की दिनानुदिन समुन्नति की हार्दिक शुभ कामना करता हूँ।

इन दोनों से बार-बार निवेदन है कि जनता के समग्रजीवन से सम्बन्धित अन्य ज्यौतिष की लघुपुस्तिकायें भी भविष्य में प्रस्तुत करें। इनका सानन्द दाम्पत्यजीवन सुखमय दीर्घायुष्यपूर्ण रहे, यही मेरी भूतनाथ बाबा विश्वनाथ के चरणों में प्रार्थना समर्पित है।

विजयादशमी
सं० २०४६

विद्यावारिधिः
श्री कृष्णचन्द्र द्विवेदी

डॉ० रामचन्द्र पाण्डेय

अध्यक्ष:

ज्योतिष विभागस्य

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयः, वाराणसी ।

दैवज्ञवर्येण श्रीमता इन्दुनाथशर्मणा विद्यावारिधिणा सम्यक् सम्पादितं "चाक्षुषफलम्" होराशास्त्रीयं ग्रन्थरत्नमयावलोकितम् । तत्र न केवलं डा० इन्दुनाथशर्मणः वैदुष्यं भासते अपितु तेषां वैदुष्य-परम्परायाः प्रभावो दरीदृश्यते ।

लघुकायेऽस्मिन् ग्रन्थरत्ने प्रमुखानां ज्योतिषविषयाणां समासेन सन्निवेशो नूनं हि ज्योतिषशास्त्रजिज्ञासूनां कल्याणाय भविष्यति ।

तत्र एतेषां सहधर्मिण्या विश्लेषणपराकृता हिन्दीव्याख्या अस्योपयोगित्वं सामान्यानां जनानां कृते सुलभीकृतम् ।

आशासे अनेन ग्रन्थेनास्य प्रयासः उद्देश्यश्च सफलीभूतो भविष्यति ।

शुभाशंसी

दि० १४–१०–८९

डॉ० रामचन्द्रपाण्डेयः

अध्यक्ष : ज्यौतिषविभागे

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयः,
वाराणसी

॥ श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥

वंशानुचरितम्

गोमती सलिलैः पूते, सेविते विप्रमण्डलैः ।
ग्रामे वसिरहानाम्नि, जौनपुरप्रमण्डले ॥ १ ॥

आसीद् विप्रोत्तमः श्रीमान्, रामसेवक संज्ञकः ।
गोविप्रधर्मरक्षाकृतविशुद्धः श्रुतिसम्मतः ॥ २ ॥

अनुरूपगुणौ जातौ, तस्य पुत्रौ सुधार्मिकौ ।
ख्यातौ रामगरीबाख्यः तथा रामभरोसकः ॥ ३ ॥

विख्यातात् रामगरीबात् पुण्यराशिः सुतोऽभवत् ।
श्यामाचरणशर्माख्यः, शुभ्रेण यशसावृत्तः ॥ ४ ॥

विद्वान् स धर्माचरणाप्तकामः
वासाय काशीपुरमाजगाम ।
संस्थापयामास च पाठशालां
प्रमोदनाम्नीं सुरवाक् समृद्धौ ॥ ५ ॥

ततोऽभवद् वंशकरः प्रसिद्धः
ज्योतिर्विदां श्रेष्ठतमस्तपस्वी ।
युक्तो यशोभिः सुगुणैरयोध्या-
नाथाभिधः धर्मपरः कृपालुः ॥ ६ ॥

रघुनाथो रङ्गनाथो, गौरीनाथस्तृतीयकः ।
उपेन्द्रनाथश्चत्वारः, पुत्राः जाताः यशस्विनः ॥ ७ ॥

ज्येष्ठात् सुविख्यात् गुणाद् बभूवुः,
त्रयः सुताः श्रीरघुनाथसंज्ञात् ।
ज्येष्ठः प्रसिद्धोऽमरनाथ शर्मा,
श्रीभैरवश्रीप्रमथौ कनिष्ठौ ॥ ८॥

त्रयस्तु तस्यामरनाथनाम्नः,
सुता बभूवुः श्रुतकीर्तियुक्ताः ।
गुणान्वितास्ते कुशलेन्दुसिन्धुः
संज्ञाः कुलस्यास्य विवर्धनाय ॥ ९ ॥

बभूव पुत्रो ज्ञानेन्द्रः कुशलात् शर्मणस्तथा ।
सिन्धुनाथात् प्रजातोऽसावरविन्दः प्रसन्नधीः ॥ १० ॥

तथेन्दुनाथोऽमरनाथ पुत्रः
धीमान् महाधर्मविदां वरिष्ठः ।
विशेषतो ज्योतिषशास्त्रनिष्ठः
तनोति सर्वत्र हि वंशकीर्तिम् ॥ ११ ॥

होराशास्त्र बिचक्षणोऽपि गणिते सिद्धान्तमौहूर्तिके
विख्यातो विवुधो यथार्थवचनो दक्षः फलादेशने ।
स्वाध्याये निरतोहि चाक्षुषफलं ग्रन्थं चकाराद्भुतम्
आलोच्याखिलशास्त्रसारनिचयान् ज्योतिर्विदां, प्रीतये ॥१२॥

विख्याताद् भैरवनाथात् धर्माचरणतत्परात् ।
गोविन्दनाथ शर्माख्यः जातः पुत्रः प्रतापवान् ।। १३ ।।

लल्लूपनामा विख्यातो ज्योतिषे सुविचक्षणः ।
नाथान्तः प्रमथः शर्मा धार्मिको यशसान्वितः ।। १४ ।।

रङ्गनाथात् सुतौ जातौ, विमलेन्दु समौ गुणैः ।
शम्भुनाथस्तथाऽनङ्गनाथौ परमधार्मिकौ ।। १५ ।।

शम्भुनाथस्तु विख्यातः ज्योतिर्वित् सत्यवाक् सुधीः ।
उमङ्गनाथ शर्माख्यः जातः पुत्रस्ततोगुणी ।। १६ ।।

जातावुपेन्द्रनाथात्तु सुतौ युक्तौ सुधार्मिकौ ।
श्रीप्रजानाथ धीरेन्द्रौ अनुरूपगुणौ स्मृतौ ।। १७ ।।

प्रजानाथ सुतो धीमान् वैभवेन्द्रो गुणान्वितः ।
राजते शर्मवंशस्तु, विश्वनाथप्रसादतः ।। १८ ।।

महामहोपाध्याय पं० अयोध्यानाथ शर्मा

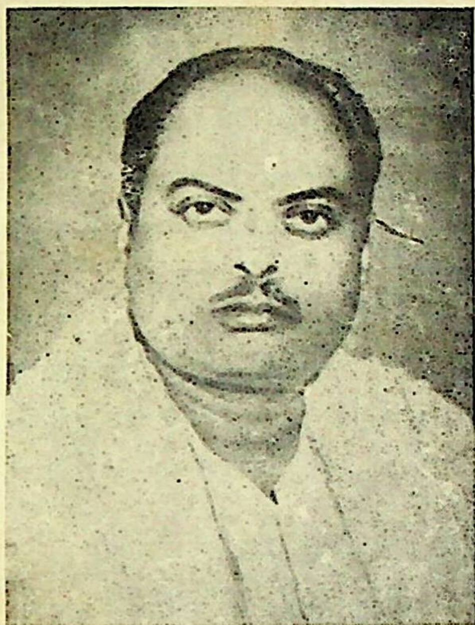


पितामहपादानामयोध्यानाथशर्मणाम् । पदाब्जेष्विन्दुनाथोऽहमर्पयामि कृतिं शुभाम् ।

वंशवृक्षम्

- स्व. पं. रामसेवक शर्मा ग्राम–वसिरहाँ जिला–जौनपुर
  - स्व. पं. रामगरीव शर्मा + स्व. पं. रामभरोस शर्मा
    - स्व. पं. श्यामाचरण शर्मा (सर्व प्रथम काशी में आये, नईबस्ती ईश्वरगंगी, प्रमोद पाठशाला वाराणसी)
      - महामहोपाध्याय पं. अयोध्यानाथ शर्मा उर्फ अवधेश
        - स्व. पं. रघुनाथ शर्मा ज्यौ. आ.
          - स्व.पं. अमरनाथ शर्मा ज्यौ. आ. (वटुक जी)
          - स्व. पं. भैरवनाथ शर्मा
            - डॉ. गोविन्दनाथ शर्मा
              - पं. कुशलनाथ शर्मा
                - पं. ज्ञानेन्द्रनाथ शर्मा
              - पं. इन्दुनाथ शर्मा
              - पं. सिन्धुनाथ शर्मा
                - पं अरविन्दनाथ शर्मा
          - डॉ. प्रमथनाथ शर्मा लल्लू जी
        - स्व. पं. रङ्गनाथ शर्मा
          - स्व. पं. शम्भूनाथ शर्मा
            - पं. उमङ्गनाथ शर्मा
          - पं. अनङ्गनाथ शर्मा (मुकुन्दजी)
        - स्व. पं. गौरीनाथ शर्मा
        - पं. उपेन्द्रनाथ शर्मा
          - पं. प्रजानाथ शर्मा (बल्लू जी)
            - पं. वैभवेन्द्रनाथ शर्मा
          - धीरेन्द्रनाथ शर्मा (छोटकू जी)

प्रणेता



विदितवंश अवधेशको सुत सपूत रघुनाथ ।
तिनके सुत श्रीअमरपति उनके इन्दुनाथ ॥

कृतज्ञताज्ञापनम्

अत्र ग्रन्थस्यास्यनिर्माणे ज्योतिर्विदां कालनिष्णातानां विद्यावारिधिपदभाजामाचार्याध्यक्षपादां वेदवेदाङ्गसंकायाध्यक्षाणाम् श्रीविभूषितां श्रीकृष्णचन्द्रद्विवेदीनामाभारप्रेरणया, विद्यया, प्रोत्साहनेन लघुकायं चाक्षुषफलमिति ग्रन्यस्य लेखनाय साफल्यमातन्वितन्तस्मात्तेभ्यः साभारं प्राणामाञ्जलयः समर्पयामि। ग्रन्थमिदं लोकोत्तर कीर्तिभाजां महामहोपाध्यायोपाधिसमलङ्कृतां ज्योतिषमार्तंडभूतां कालगतिविज्ञानाम् दैवज्ञशिरोमणिभूतां आचार्यपदामयोध्यानाथ शर्मणां महाभागानां बद्धाञ्जलिभ्यां पुस्तकमिदं करकमलेसमर्पयामि। अथ च आयुर्वेदविद्याविज्ञानां सदाचारनिरतानां पितामहांवैद्यराजपदभाजाम् उपेन्द्रनाथशर्मणां कृते भूयोभूयः कृतज्ञतां ज्ञापयामि यतो हि तैराशिर्वादवचोभिः अद्याऽहमस्य ग्रन्थस्य निर्माणे साफल्यमावाप्तमिति।

ततश्च ज्योतिष कुल परम्परानुगतानां पीठासनस्थानां ज्यौतिषे चमत्कृतिरहस्यविज्ञानां घटप्रयोगविधिनिष्णातानां रामोपासकानां सहृदयहृदयानां प्रमथनाथशर्मणां पदारयिन्वे नम्रीभूय प्रणतयः निवेदयामि येन शुभाश्रीवादैः ज्योतिषशास्त्रे प्रवेशमधिकृतामिति।

सम्पूर्णानन्दविश्वविद्यालयीयानां डॉ० पारसनाथ द्विवेदीनामुपाचार्यं वेदान्तविभागीयानामप्याभारं नम्रीभूय स्वीकृत्य कृतज्ञतां विज्ञापयामि।

अथ च सुहृद्वरेषु व्याकरण-साहित्य-दर्शन-राजनीतिधर्म-वैद्यक-विधिप्रवीणेषु प्राच्यविद्यासु, परिचितश्चाधुनिकविधिषु सहचर-दुःखत्रयेषु मनसा वचसा कर्मणा हितरतेषु डॉ० बदरीनारायण पाण्डेयेषु निजात्मनं सन्निवेश्य तेभ्यः सादराभिनन्दनमुपस्थापयामि। मन्ये एभिरेव योगदानैरस्य ग्रन्थस्य प्रकाशनकार्यं पूर्णतामगमात्। अतः हृदयेन तम्प्रत्याभारं कल्पयामि।

अन्ते च हिन्दी टीकाकर्तृभ्यः श्रीमती शशिकला शर्मभ्यः निजाशीषमुपकल्पयामि यतोहि आभिः मनोयोगेनास्य ग्रन्थस्य भाषाव्याख्यानेन मामुपकृतमिति तां हृदयेन संश्लेषयामि मन्ये एतया हिन्दी व्याख्या कार्यमस्य ग्रन्थस्य कृते महते परोपकाराय कल्पयिष्यते।

ततश्चराजराजेश्वरी प्राच्यपाश्चात्य विद्यासंस्थानप्रकाशकेण यत्साहाय्र्येन प्रकाशनमनोयोगेन उपस्थापितन्तत्त तस्याः प्रकाशनाधिकारिणे राजराजेश्वरीति तस्याः कृते कृतज्ञतां विज्ञाप्यनात्मगौरवमनुभवामि।

अन्ते अत्र कार्ये ये केचन साहाय्यमुपपादितं तेभ्यः सर्वेभ्यः भूयो भूयः प्रणामांजलिं समर्प्य विरमामि।

॥ श्री जानकीवल्लभो विजयते ॥

अत्र किञ्चित्

अत्र वेद एव निखिल निगमागमविधूतचेतसां विपश्चिदां यदिह जगति जनयितां सर्वत्र श्रेयो मार्गप्रदर्शकस्तत्र भवतामिति सुविदितमेतत्। नात्र कश्चिदपि विषयोऽनुपलभ्यो याथातथ्येनान्वेषयतां सताम्। अयमेव शासनक्रमः जगन्नियन्तु जगदीश्वरस्य सूर्यनारायणस्यैतदर्थमेवाद्यौ मीनावतारोऽप्यङ्गीकृतो भगवता वेदतत्वेनेति, ततश्च तज्ज्ञानप्रवर्तकास्तत्षडङ्गभूताः शिक्षा कल्प-व्याकरण-ज्यौतिष-निरुक्त-छन्दाश्च प्रचक्ष्यन्ते। यथाहि—

शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं च कल्पः करौ।
या तु शिक्षाऽस्य वेदस्य सा नासिका पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः॥

अत्र षडङ्गेषु ज्यौतिषशास्त्रं दिग्देशकालव्यञ्जकत्वेन-यज्ञतपदानव्रतोपवासादीनां प्राक्तनबीजमिति मत्वा समग्रशास्त्रापेक्षयाऽस्य ज्योतिषशास्त्रस्याध्ययनाध्यापनमतीवावश्यकमिति जानन्तु सुधियः। "सर्वैः जनैर्यज्ञन्तपन्दानव्रतादिभिः नियमैरिश्वर उपासनीय" इति राधान्तो वेद-वेदाङ्गोपनिषद्दर्शनपुराणेतिहासादीनामेकमेव दरीदृश्यते। "वैफल्यं परिणमती"ति साधुरेव तस्मात् कालात्मकस्यास्य ज्योतिषशास्त्रस्य प्रतिपदं प्रयोजनं फलत्येव। अपरञ्च नैतद्विना लोकानां लौकिकं वेदानां च वैदिककर्म साफल्यमुपगच्छतीति नारदेनोच्यते—

वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम् ।
विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं न सिद्ध्यति ।।

अत्र तु भगवान् सूर्य्यो मुक्तिपथो रविरीश्वरः तदंशभूताः ज्योतिमन्तो ग्रहाः देवाश्च चक्षुरूपज्योतिषशास्त्रेण बिना न केनापि शास्त्रेण ज्ञातुं शक्यन्त इति नास्ति विचकित्सा। एतेन ज्योतिमन्तरा द्रष्टुं न शक्यते किञ्चिद्वस्तु इत्यपि अनुगम्यते ।

न च "दैवाधीनं जगत्सर्वमित्युक्तिरनुसारेण ग्रहाश्च ते देवतांशका" इति वचनसामर्थ्याच्च सम्पूर्णजगत् ग्रहाधीनमेवेति । वस्तुतः सूर्यकिरण संश्लेषवशादेव सकलं जगज्जातं चराचरं जीवनं स्थैर्यं च मावधारयति प्रत्यहं त्रिकालं ऋग्भिर्रविरुपासते लोकैः । यथाह--

पश्येम शरदः शतम् ।
जीवेम शरदः शतम् ।
शृणुयाम शरदः शतम् ।
प्रब्रवाम शरदः शतम् ।
अदीनाः स्याम शरदः शतम् ।
भूयश्च शरदः शताम् ।

अत्र लोके तेषां नभ-नभचर, भू-भूधर त्रिदशदानवमानवानां स्थितिमिति गतिपरिज्ञानं ज्योतिषमन्तरा न केवलं दुर्घटमुतासम्भवमपितु स्यादेव । यथाहि नेत्रं बिना नहि कोऽपि जनः स्वाभिलषितं पदमेकमपि गन्तुं पारयेत्तथैवानेन ज्योतिषशास्त्रचक्षुषा बिना जगतः श्रेयो मार्गः कथमपि न सम्भवति कालपथिगमनम् ।

वस्तुतः ज्यौतिषशास्त्रमिदं शास्त्रमन्यन्नास्ति सन्देहास्पदं यतोहि प्रत्यक्षत्वात् । प्रकल्पितं चाक्षुषफलम् सदैव प्रत्यक्षत्वेन अवलोक्यते । यथाहि--

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ।
प्रत्यक्षं चाक्षुषं शास्त्रं चन्द्राकौं यत्र साक्षिणौ ।।

अथेदं शास्त्रं प्रत्यक्षम् । तत्रैव तत्प्रवर्तका अपि प्रत्यक्षभूता ऋषयः ।

सूर्यः पितामहो व्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः ।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरङ्गिरा ।।
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः ।
शौनकोऽष्टादशश्चैते ज्योतिः शास्त्रप्रवर्तकाः ।।

वस्तुतः ज्योतिःशास्त्रमिदं चिरन्तनं पुरातनमार्षञ्च स्मर्यते । एतेनास्य शास्त्रस्य प्रत्यक्षं चाक्षुषफलमश्नुते ।

दिव्यं चक्षुर्ग्रहार्क्षाणां दर्शितं ज्ञानमुत्तमम् ।
विज्ञायार्कादिलोकेषु स्थानं प्राप्नोति शाश्वतम् ।।
ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम् ।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमाङ्गतिम् ।।

अन्यत्र गर्गोक्तेनावगम्यते दैवचिन्तक विशिष्टज्ञानमयत्वाद् ब्रह्मलोकं सम्ः तिष्ठते ।

न साम्वत्सपाठी च नरके परिपच्यते ।
ब्रह्मलोकप्रतिष्ठां च लभते दैवचिन्तकः ।।

न चात्र भास्करवचनाद् चाक्षुषफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते। तत्र यदुपचितमन्यज्जन्मनि शुभाशुभं कर्म तस्य कर्मणः रेखाक्रमेण, व्यञ्जयति शास्त्रमेतद् गहने चान्धकारे प्रदीपवत् तच्छास्त्रस्य फलादेशेन लाभकथनम् प्रकरणकथानकमस्य मुख्यप्रयोजनम्।

पुराकाले ज्यौतिविदः पण्डिताः ये दृग्गणितेव यत्किमपि तथ्यं तत्फलं च समुपस्थापयन्ति स्म। अद्यत्वे तु न तथा स्फुटफलमवलोक्यते।

मन्ये सा हीयं भारतभूमिः, इयमेव सा ज्योतिषविद्या, तत्रैतद्विद्योपासकाः भवन्ति स्म। दैवज्ञाः तथ्यतो दैवज्ञा भवन्ति स्म। सर्वे एवं स्वगृहे स्वयमेव ज्यौतिर्विदः गृहादीनां वेधोपकरणीभूतविविधयन्त्रादीनां निर्माणं कुर्वन्ति स्म। परश्चाद्यत्वे दैवज्ञसम्राट्-दैवज्ञशिरोमणिः ज्योतिर्भूषण-ज्यौतिषरत्न-ज्योतिष–विद्यावारिधि—वाचस्पतिप्रभृतियथेच्छोपाधिधारिणो दैवज्ञमानिनो प्रच्छकानामेकस्यामपि पृच्छायाम् यथातथ्येन सन्तोषजनकमुत्तरं दातुं पारयन्ति इति कथं न ते तेषां पुरतो हास्यतामुपयेयुः।

साम्प्रतमियं भारतभूमिः नूनं समयप्रभावात् असहधर्मिजनप्रकोपात् तदवतां पण्डितानां नितरां ह्रासयुतां बलाद् वक्तुं नोत्सहे, यतोहि यथापूर्वमद्यापि केचनमनीषिणो वर्तन्त एव। परन्तु तेषु पण्डितजनेषु प्रायेण बहवो न देयं यस्य कस्यचिदिति मूलमन्त्रोपासकाः नास्मदन्तरा केचिदिमां विद्यां जानन्तु इति परोत्कर्षमसहमानः स्वयं कार्यकरणकुशला अपि सदुद्योगरहितास्तस्मादेवार्थहीनाः विविध-

यन्त्राणामभावमूलकाः भूत्वा जडमूकान्धवत् सीदन्ति तस्मात्कथमस्माकं देशे विद्यायाश्चोन्नतिः सम्भाव्यते ? अस्माकं खल्वायं राद्धान्तः यत्सदुत्तममार्गानुसारिणो जनाः न जातुं वैकल्यमुपयान्ति तस्मादन्यथा प्रतिपदमेव तस्यानिष्टसम्भावने ति लोकानां शुभाशुभपथप्रदर्शकानां दर्शकं ज्यौतिषशास्त्रम्, अतएव तत्र दोषयुते कथन्न स्याल्लोकानामकल्याणमिति इदानीन्तना वयं विविधामापदां, पदं कुर्यामः ।

शनैः शनैः अस्माकं पूर्वजानां विद्या, यशः समादरं, दृष्ट्वा चात्माकं चाधुनिकीं स्थितिं शतखण्डचेतसो भारती रोरुष्यते । तथा चास्मद् एव गृहीतविद्यकाः वैदेशिकाः कायेन-मनसा-वचसा च विद्योन्नतौ दृढ़परिकराः अस्माकमेवादर्शभूताः विराजन्तेतराम् । अस्माकन्तु अयमेव विश्वासो येनाद्यापि तच्छास्त्रसम्बन्धिनः पारस्परिकं मात्सर्यम् अन्योन्यमुपहसितचेतसो विहाय "किन्न साध्यं मनुष्याणामिति मनसि निधाय धियैतच्छास्त्रे चिरकालादापतितशैथिल्यमपहाय दृढ़परिकरा भवेयुस्तदाऽचिरादेव पुनरेतच्छास्त्रस्य परमामुन्नतिं दर्शयन्तो आत्मगौरवं स्थापयिष्यन्ति ।

मन्ये तत्तदर्थार्षग्रन्थानामध्ययनाध्यापनं तदनुमितं ग्रहादिवेधोपकरणीभूतयंत्रादिनां निर्माणं तदुपयोगं च प्रतिविद्यालयं विद्यार्थिनमुपाध्यायश्चावश्यकतया प्रतीयते । एतेनावश्यमत्राधुनिके कम्प्युटरयुगेऽपि अस्य चाक्षुषफलस्य चमत्कृतिराश्चर्यमुपकल्पयिष्यतीति नात्र संदेहः ।

प्रकृते तु एतदेत्र विशिष्टविज्ञानमनेन ग्रन्थेन चाक्षुषफलमिश्यनेन विज्ञातुं शक्यते ।

अत्र ग्रन्थे आदौ कालनियामकस्य भगवतोविश्वनाथस्य प्रार्थना विहिता । तेनैवाशिवचसा कालगतिभेदपुरस्सरं मुहूर्त्तमवगम्य शुभाशुभकार्याणां परिणतिः कर्त्तव्यः । अथच कालनियन्त्रकस्य वपुरिव मेषादिलग्नानामपि स्वरूपभेदमवलोक्यते यथा शिरमुखवक्षहृदयोदरकटिर्वस्तिलिङ्गोरुजानुजङ्घादीनामवयवानामाकलनेनैव कस्यचित्पुरुषस्य स्वरूपमुद्भवति तथैव कालङ्करस्यापि शिरो मेषः, मुखं वृषः, वक्षोमिथुनः हृदयं कुलीरः, उदरं सिंह, कटिः कन्या, वस्तिः तुला, लिङ्गं वृश्चिकः, उरुयुगलं, धनुः, जानुयुगलं मकरः, जङ्घे कुम्भः, पादयुगलं मीन इति प्रक्रमोऽत्र अवगन्तव्यः ।

ततश्च के राशयः केषां ग्रहाणामाग्रहेण स्वामित्वमाश्रयन्ति इत्यस्यापि विशेषव्याख्यानमिह शास्त्रे सुस्पष्टतयैवोच्यते । एवञ्च तुलावृषाधिपः शुक्रः, मेषवृश्चिकयोश्च कुजः, कन्यामिथुनयोः बुधः, कर्कस्य चन्द्रमा, धनुमीनयोः वृहस्पतिः, मकरकुम्भयोः शनिः, सिंहस्याधिपश्च सूर्यः स्मर्यते । एते च नवग्रहाः स्वामित्वाश्रयत्वेन शुभाशुभं फलमुपस्थापयन्ति ।

वैशिष्ट्यञ्चात्र केषां नक्षत्राणां का राशिरिति निरूपयन् ग्रन्थकारेणतत्रैव फलाफलविववेचनमपि निर्णीतमिति प्रक्रियासारल्येनानायासेन सामान्यज्यौतिविदां श्रेयसे कल्पयति । यथाहि—

अश्वनी भरणी चाग्नेः पादं मेषो भवेत्खलुः ।
भौम क्षेत्रेऽर्थं संयुक्तो मानी संयुक्तकिल्विषः ॥
पिङ्गाक्षो रक्तगौरश्च महीषो हिंसकस्मृतः ।
दन्तरोगी प्रवासी च कर्त्ता ज्वलनसन्निभः ॥

एवमनेन क्रमेण समेषां नक्षत्राणां राशिविनिर्णीय तत्र जातकस्य कृतप्रश्नस्य वा फलाफलविवेक सुलभ एव भवति ।

तनु, धन, सहज, सुहृद्, सुत, रिपु, जाया, मृत्यु, धर्म, कर्माय-व्यया इत्येताः द्वादशभावाः राशीनां भवन्ति । तत्र जातकस्य जन्माङ्गलग्नेन सह भावमाकल्लय्य भावानां फलाफलमपि विश्लेषणतां याति । एतदाधारे हि कुण्डल्याः विचारोऽवगम्यते । मन्ये एतेषां द्वादशभावानां विवेचनया हि जातकस्य कृतप्रश्नस्य वा समाधानमवगम्य दैवज्ञः कालगतिं विस्तारयति । कालगतिमाश्रित्य हि कालनियामकस्य दैवस्य गतिरपि यथायथं विनिश्चीयते । तेनैव फलमधिगम्यते ।

मुष्टिप्रश्नस्य लक्षणं मेषादिराशिषु कथमुपकल्प्यते इत्यत्रापि विशेषाख्यानमिहोपलभ्यते ।

अथ च मुष्टिप्रश्नाधारीकृत्य जन्म लग्ने प्रश्नलग्ने वा कस्य कामनाविषयस्य चिन्ता भवतीत्यस्य विस्तरेण विवेचनमुपलभ्यते । चन्द्रगतस्थितिमादाय मेषराशौ द्विपदाचिन्ता, वृषे चतुष्पच्चिन्ता, मिथुने गर्भचिन्ता, कर्केऽव्यवसायचिन्ता, सिंहे जीवचिन्ता, कन्यायां स्त्रीचिन्ता, तुलायां धनचिन्ता, वृश्चिके व्याधिचिन्ता, धनुराशौ धनचिन्ता, मकरे शत्रुचिन्ता, कुम्भे स्थानचिन्ता, मीने दैवापच्चिन्ता समधिगन्तव्या । एवं सुस्पष्टनेतत् यत्सामान्यत्वेन तत्र सर्वत्र कामनाविषयत्वेन वा फलसामान्यन्तूपलभ्यते एव । परन्तु दैवप्रासादात्तु सर्वत्र विशेषफलमिति विवेकः सुतरां समुपस्थितमवलोक्यते ।

ततश्च नवमांशविचारे केषां लग्नानां भोगकालः कियत्पलात्मक इत्यपि स्फुटमुपन्यस्तमुपलभ्यते । तत्रैव भोगकालमादाय फलविशेषस्य चाख्यानमप्युपन्यमत्रावाप्यते । अत्रैव सन्धेयानां लग्नानां ग्रहस्वामि-समयत्वेन शुभाशुभं फलमपि स्फुटं विद्यते । एवञ्चोपर्युक्तक्रमे संक्रान्ति स्वरूपस्य उदय-मध्याह्नास्त-रात्रि समासेन फलम् न्यूनाधिकमिति विवेकः उक्तः । अन्ते च द्वादशलग्नानां भोगकालः द्वादशलग्नेषु प्रवृत्तिनिवृत्याभ्यां निश्चीयते ।

चरस्थिरौ च द्विधा राशयः । तेष्वपि पुंस्त्रीभावो क्रूराक्रूरसंज्ञे च भवतः ! राशयः द्वादशराशिषु पञ्चमांशेन नवमांशेन च पूर्वादि-क्रमेण चतसृषु दिक्षु स्थिरम्भूत्वा क्रूर-सौम्यस्वभावाभ्यां शुभाशुभं फलं प्रयच्छन्ति । एवमेवात्र ग्रन्थे फलितज्योतिषस्य फलविषयकं चाक्षुषफलं यथायथन्निश्चीयते नात्र धीमतां दैवज्ञानां विचकित्सा ।

अत्र महान्तोऽपिधीरा भग्नोद्यमा जायन्ते तत्र दुस्तरे ज्योतिष-महार्णवे परमाल्पस्वमतिना वालबलाद् साफल्यमिच्छता मया विदुषां पुरतो यद् दाढर्यमाविष्कृतं तत्तत्र भवतां विद्वच्चरणानां गुरु-वराणामाशिवादमेवातो वालादपि सुभाषितं ग्राह्यमिति नयमनु-पालयन् भवद्भिस्तत्र नीरक्षीर विवेकधीभिः गुणान् स्वकीयान् अगुणान् मदीयान् इति मनसि संधाय विद्वज्जनाः मां प्रोत्साह्य निर्दिशन्तीति प्रार्थयते ।

विजयादशमी — भावतः

संवत् २०४६ — डॉ० इन्दुनाथ शर्मा

दो शब्द

वेद समस्त विद्या विधाओं का मूल स्रोत है। उसके अङ्गों के रूप में उपबृंहण के निमित्त वेदाङ्गों का निर्वचन किया गया है। वेदाङ्ग तत्वों को षडङ्गों के नाम से जाना जाता है। वेद का साकार स्वरूप भी निम्न श्लोक के अन्तर्गत संज्ञात है—

शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी
श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं च कल्पः करौ।
या तु शिक्षाऽस्य वेदस्य सा नासिका
पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः ॥

अतः यह स्पष्ट है कि वेदस्वरूप में ज्योतिष चक्षु है। चक्षु के बिना कोई भी वस्तु दृष्टिगोचर नहीं होती है। वह ही जब न हो तो जगज्जाल के प्रकृत्यङ्गों को कैसे प्रत्यक्ष किया जा सकता है।

विज्ञानवाद की परम्परा में प्रत्यक्ष प्रमाण को ही स्वीकार किया जाता है। जो चक्षु से देखा जा सके, वही सत्य वस्तु है। अर्थात् सत्तात्मक स्वरूप ही संसार तत्त्व है। चाक्षुषफलम् नामक यह लघु ग्रन्थ इसी बात का प्रमाण है। चक्षुषा दृष्टं फलम् चाक्षुषफलम् के अनुसार इस पुस्तक का लक्ष्य भी भावि परिणामों की जानकारी पाना है। हम प्रकाश को भी ज्योतिष का पर्याय मानते हैं। ज्योतिष की

परम्परा प्रकाश के ऊपर अर्थात् सूर्यनारायण की गतिविधियों पर ही आधारित है। जिससे हम गहों का विपरिणाम मान कर जातक अथवा किये गये प्रश्नों का मुहूर्त कालिक समय के आधार पर फलादेश करते हैं। प्रस्तुत लघुग्रन्थ की हिन्दी टीका का प्रणयन मैंने इस लक्ष्य को लेकर किया है कि सर्वसाधारण व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक सुगम सरल तथा बोधगम्य हो जाय। ज्योतिष तत्वों के अनुसार ग्रहनियमों को जानकर सामान्य दैवचिन्तक भी सुलभता से फलादेश करने में समर्थ हो जाय, यही इस टीका का कर्त्तव्य परायणता है। इस टीका के लिखने में मुझे कठिनाई भी महसूस हुई परन्तु उसका निराकरण डॉ० कु० रामेश्वरीकुमारी रासेश्वरी के सहयोग से सुलभ रहा। एतदर्थ मैं उनकी आभारी हूँ। अन्त में मैं अपने पतिदेव को कृतज्ञता-स्पर्श से अभिभूत करती हुई उनके चरणों में विनत हो, विराम लेती हूँ।

भवदीया
श्रीमती शशिकला शर्मा
एम० ए०, बी० एड्०

नवरात्र
संवत् २०४६

विषयानुक्रमणिका



॥ श्री जानकीवल्लभो विजयते ॥

चाक्षुषफलम्

"शशीन्दुसम्बलितम्"

ध्यात्वा शिवङ्कालनियामकं शुचि-
ज्योतिः परं शास्त्रसमूहदर्शितम् ।
प्रवच्मि सम्यग् लघुचाक्षुषं फलम्
अवेहि तत्त्वं सुलभेन शाश्वतम् ॥ १ ॥

॥ श्री साम्बं शिवाय नमः ॥

विमृश्य नत्वा शिवया शिवम्परं
पञ्चाङ्गयुक्तोप्यफलो यतो विना ।
ज्योतिः प्रदीपं सुलभात्सुकल्पकं
सुभूरिविष्टब्धमतं प्रकाशते ॥ १ ॥

॥ नमो नवग्रहेभ्यः ॥

सूर्य सोम मंगल शनि बुध बृहस्पति राहु ।
शुक्र केतु सब ग्रहों को नमन करु सद् भावु ॥
मंगल करन गणेश को प्रणति सहस्र समर्थ ।
विघ्न रहित होवे मेरा शास्त्रकर्म सद्ग्रन्थ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

अथ—खल्विह जन्माद्यवच्छेदेन शुभाशुभ—सकलव्यवहारप्रयोजकतावच्छेदकीभूत समयज्ञानार्थमिदं परमशिवाभेदेन सकलग्रहाधीशान् चिन्तयन्नारभते । ध्यात्वेति । उक्तं हि—

आदित्यञ्च शिवं विद्याच्छिवमादित्यरूपिणम् ।
उभयोरन्तरन्नास्ति आदित्यस्य शिवस्य च ॥ २ ॥

उपर्युक्तश्लोकप्रसङ्गेनादित्यशिवयोः हि कालनियामकत्वमिति ध्वनितम् । **चाक्षुषफलमिति** । दर्शपौर्णमासादिकालपरिच्छेदकत्वेनेवेदं ज्योतिष्टोमादीनामपि प्रवर्तकमित्यस्य वेदाङ्गत्वं वेद्यम् । तस्य चाक्षुषः फलस्य फलमिति बोध्यम् । तद्यथा—

मुखं व्याकरणं ज्योतिर्नेत्रं छन्दोङ्गसंस्थितिः ।
श्रोत्र निरुक्तं शिक्षाथ घ्राणं कल्पा कराविह ॥ ३ ॥

इहेत्यधिकमन्यत्र विस्तरस्तस्मादत्र विशेषाख्यानन्नोपयुक्तं प्रतीयते ।

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

मैं ग्रन्थकर्त्ता पवित्र होकर काल के नियंत्रक शिव का संस्मरण कर ज्योतिष शास्त्र का विशिष्ट सार ख्याति लब्ध 'चाक्षुष फल'' नामक ग्रन्थ का निर्वचन करता हूँ । इससे ज्योतिष शास्त्र का विशिष्ट ज्ञान अनवरत, अनायास, जाना जा सकता है ॥ १ ॥

शीर्षादिपादपर्यन्ताः मेषाद्याः राशयः क्रमात् ।
नवर्क्षचरणैस्तेषां फलं स्थानानुरूपकम् ॥ २ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

शीर्षादीति । तत्र तावत् पुरुषस्य वराङ्गं शिरोमेषः मुखं वृषः वक्षोः मिथुनः, हृदयं कुलीरः, उदरं सिंहः, कटिः कन्या, वस्तिस्तुला, लिङ्गं वृश्चिकः, उरुयुगलं धनुः, जानुयुगलं मकरः, जङ्घे कुम्भः, पादयुगलं मीन इति । जन्मकाले यो राशिः पापग्रहाङ्कितः सः पुरुषस्य यस्मिन्नङ्गे अंशे वा स्थितः तत्राङ्गे जातकस्योपघातको वक्तव्यः । तत्र तु सौम्यग्रहाङ्कितस्य तत्र पुष्टिरिति विवेकः ।

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

शिर से लेकर पैर तक क्रमशः मेष आदि बारह राशियाँ यथाक्रम होती हैं । जन्मकाल में जो राशि जिस अंश पर स्थिर हो, उसका उस अंश पर पाप-ग्रह और सौम्य ग्रह के अनुसार अच्छा और बुरा फल समझना चाहिये । अर्थात् जातक के शिर स्थान में मेष, मुख स्थान में वृष, वक्षस्थल में मिथुन, हृदय में कर्क, उदर में सिंह, कमर में कन्या, वस्ति (नाभी के नीचे पेडू-स्थान) में तुला, लिंग स्थान में वृश्चिक, दोनों उरूमें धनु, दोनों जानुओं में मकर, जङ्घों में कुम्भ, दोनों पैर में मीन राशि को क्रमशः समझना चाहिये । जन्मकाल में जातक के जिस अंग की जो राशि पापग्रह से युक्त होगी वह जातक के जिस अंग में स्थित होगी, उसी अंग को नष्ट करेगी । तथा सौम्य ग्रह जिस अंग में स्थित होगा, वह उस अंग की पुष्टि करता रहेगा । ऐसा ही फल समझना चाहिये । यही इस चाक्षुष फल नामक ग्रन्थ का सारतत्त्व है ।

तुला वृषेऽधिपश्शुक्रः कुजो मेषे च वृश्चिके ।
कन्यायां मिथुने चैव बुधः कर्क्यथ चन्द्रमा ॥ ३ ॥
बृहस्पतिर्धनुर्मीने शनिर्मकरकुम्भयोः ।
सिंहाधिपो भवेत्सूर्यः फलमत्रानुगम्भवेत् ॥ ४ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

ननु के तर्हि जन्मानुगा ग्रहाधिपास्तत्र श्लोकद्वयेनाह । तुलेति । तथाहि—

श्यामो रक्तः क्रियज्ञश्च क्रूरो रक्ताम्बरप्रियः ।
कुजस्याहुः फलं मेषे ग्रहैश्चावान्तरम्फलम् ॥ १ ॥
कुम्भाकृति गृंहाभिज्ञो गोपतिः पिङ्गलद्युतिः ।
वृषाधिपे फलं शुक्रे नास्पृष्टे तु ग्रहान्तरैः ॥ २ ॥
हीनप्रजोऽथ कामी च शस्त्रालङ्कारभूषितः ।
बुधाधिपे फलं चोक्तं नैसर्गत्वेन बोधनात् ॥ ३ ॥

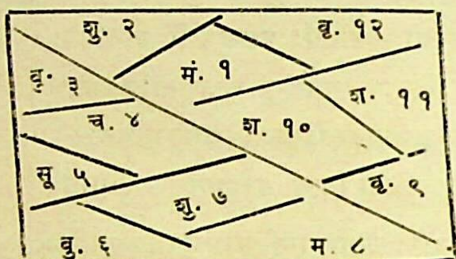
॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

तुला और वृष के स्वामी शुक्र, मेष और वृश्चिक के स्वामी मंगल, कन्या और मिथुन के स्वामी बुध, कर्क के स्वामी चन्द्रमा, धनु और मीन के स्वामी बृहस्पति, मकर और कुम्भ के स्वामी शनिश्चर तथा सिंह के सूर्य स्वामी है । जातक के ग्रह स्वामियों के स्वरूप के अनुसार तथा उनकी स्थिति को ध्यान में रखकर फल का निर्वचन करना चाहिये । क्योंकि फल उन्हीं के स्वरूप के अनुरूप ही मिलते हैं ।

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

अश्वकण्ठेभकायश्च दूरगोविजनप्रियः ।
चन्द्राधिपेऽथ कर्के तु फलमुक्तं निशामय ॥ ४ ॥
उग्राननो दुराधर्षः पाण्डुवर्णो जनप्रियः ।
सिंहाधिपेऽथ सूर्ये तु लक्षणन्तन्निरूपयेत् ॥ ५ ॥
रोमव्याप्ततनुस्तद्वद्वस्त्रविद्याविभूषितः ।
देवद्विजप्रियो नित्यं कन्यायान्तु बुधाधिपे ॥ ६ ॥
वैश्यवृत्तिः क्षुधाक्रान्तो मांसभुग् विजनप्रियः ।
तुलाधिपेऽथ शुक्रे तु फलञ्चोक्त निबोधत ॥ ७ ॥
कुम्भवत्कुर्मवद्देही जीवशक्तोऽजितेन्द्रियः ।
वृश्चिकेऽधिपतौ प्रोक्तं कुजे प्राज्ञैर्निशामय ॥ ८ ॥
मर्त्यवक्त्रोऽश्वकायश्च द्विजदेवक्रतुप्रियः ।
रत्नाभरणप्रियश्चैव गुरौ च धनुषि स्थिते ॥ ९ ॥
पद्माक्षः स्थूलकायो वै रक्ताभरणभूषितः ।
किन्नरेण समो देहो मकरस्याधिपे शनौ ॥ १० ॥
श्यामश्चाथ कुवस्त्रश्च म्लेच्छस्त्री वृत्तिकस्तथा ।
स्वस्थश्चैव कुवृत्तिस्स्यात् कुम्भस्थेऽथ शनौ फलम् ॥११॥
यज्ञदानादिभिर्युक्तो रत्नाभरणभूषितः ।
मीने बृहस्पतौ प्रोक्तं फलं स्थानानुरूपकम् ॥ १२ ॥

इत्यधिकमप्यत्र निरूपयिष्यामः ॥ ३–४ ॥



॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

कौन ग्रह किस राशि का स्वामी है इसका सुस्पष्ट विवेचन यहाँ नीचे की तालिका में दिया जा रहा है । विद्वान् जन इसे स्पष्टता से समझ सकते हैं ।

सोम	भौम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	स्वामी वर्ग
कर्क	मेष	कन्या	धनु	वृष	मकर	सिंह	राशियां
	वृश्चिक	मिथुन	मीन	तुला	कुम्भ		

अश्विनी भरणी चाग्नेः पादं मेषो भवेत्खलु ।
भौम क्षेत्रेऽर्थसंयुक्तो मानीसंयुक्त-किल्विषः ॥ ५ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

नन्विह तावत्केषां नक्षत्राणां कैरङ्गैर्द्वादशराशयो भवन्ति इति द्वादशार्धश्लोकेमाह—अश्वनीति । तद्यथा—

नासत्यान्तकवह्नि धातृ शश भृदुद्रादितीज्योरगा ।
ऋक्षेशाः पितरो नगोर्य्यमखीत्यष्टा शुभाश्च क्रमात् ॥
शक्राग्नीखलुमित्र शक्र निऋतिः क्षीराणि विश्वे विधिः ।
गोविन्दो वसुतो यपोजचरण हिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥ १ ॥
उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् ।
तत्र स्थिरं बीजं गेहशान्त्यारामादि सिद्धये ॥ २ ॥
स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रिणि चन्द्रश्चापि चरश्चरम् ।
तस्मिन् गजादिका रोहो वाटिका गमनादिकम् ॥ ३ ॥
इत्यादिना नक्षत्र संज्ञाफलाभ्यामन्यत्र बहुशः ।

तत्र तावन्मेषस्य चन्द्रस्य फलमाह—भौम क्षेत्रेइति ।

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका के एक पाद के आकलित वर्णों के समुदाय की मेष राशि बताई गई है । यदि मेष राशि में भौम (मङ्गल) हो तो उस

पीङ्गक्षो रक्तगौरश्च महिपो हिंसूकस्मृतः ।
दन्तरोगी प्रवासी च कर्त्ता ज्वलनसन्निभः ॥ ६ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

अन्यच्च—

कामिनी हृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि ।
धर्मज्ञः पृथुजङ्घश्च मेषराशौ भवेन्नरः ॥ ६ ॥

भोगी दाता शुचिर्दक्षो महामल्लो महाबलः ।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च बृषे भवेत् ॥ ७ ॥

सुवाक्यो लोलदृष्टिश्च दयालुर्मैथुनप्रियः ।
गान्धर्वः कण्ठरोगी च कीर्तिभागी धनी गुणी ॥ ८ ॥

गौरो दीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढ़व्रतः ।
समस्थो द्युतिवादी च जायते मिथुने नरः ॥ ९ ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

मुहूर्त में उत्पन्न सन्तान (जातक) अभिमानी पापकर्मी, पिङ्गाक्ष, लाल गौरवर्ण, पृथ्वी का स्वामी, हिंसा करने वाला, दांत के रोग से पीड़ित, विदेश यात्रा करने वाला तथा अग्नि के समान तेजस्वी होता है ॥ ५–६ ॥

नासत्य	अन्तक	वह्नि	धातृ	शशभृत्	रुद्र	अदिति	इज्य	उरग	पितृ	भगो	अर्थमा	रवि	त्वष्टा	आशुगा
अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.

शक्राग्नि	मित्र	शक्र	निॠति	क्षीर	तिश्ये	विधि	विष्णु	वसु	तोयप	अजचरण	अहिर्बुध्य	पूषा
वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू	उ.	अ.	श्र.	ध	श.	पू.	उ.	रे.

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

कार्यकारी धनी शूरो धर्मिष्ठो गुरुवत्सलः ।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृतवित्तमः ॥ १० ॥

प्रवासशीलः कोपान्धो बाल्ये दुःखी सुमित्रकः ।
अनाशक्तो गृहे वक्ता कर्क राशौ भवेन्नरः ॥ ११ ॥

क्षमायुक्तस्त्रपायुक्तश्शीतभीतः प्रकुप्तवान् ।
विनयी जनप्रियो लोके सिंहराशौ भवेन्नरः ॥ १२ ॥

क्रीडाशक्तो जनाह्लादी शुभगोधनवांश्च सः ।
दाता दक्षकविर्वृद्धः कन्याजातो भवेन्नरः ॥ १३ ॥

वाणिज्यश्चञ्चलाक्षश्च गृहमध्येऽति विक्रमः ।
लक्ष्मीकश्च सदामिष्टस्तुलायां जायते नरः ॥ १४ ॥

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिङ्गललोचनः ।
परदाररतो मानी निष्ठुरस्स्वजने जनः ॥ १५ ॥

स्वसाहसाप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्टधीः ।
धूर्तश्चोरफलारम्भी बृश्चिके तु भवेन्नरः ॥ १६ ॥

शिल्पविज्ञानसम्पन्नस्तेजस्वी मिष्टवान् कविः ।
धनाढ्यो दिव्यभार्यश्च धनुर्जातो भवेन्नरः ॥ १७ ॥

कुले नेष्टो वशस्त्रीणां धनी त्यागी स बान्धवः ।
पुत्राढ्यो गीतनृत्यज्ञो मकरे सो भवेन्नरः ॥ १८ ॥

दातावसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनेश्वरः ।
स्नेहहीनश्च भीतश्च कुम्भे सो जायते नरः ॥ १९ ॥

गम्भीरचेष्टितश्शूरः कोपी वाग्मी नरोत्तमः ।
कुलप्रियोऽथ शास्त्रज्ञो मीने जातो भवेत्कविः ॥ २० ॥

इत्यादि सुविस्तरेण विवेक्तव्यम् ।

वह्ने स्त्रिपादं रोहिण्यामृगार्द्धं वृष उच्यते ।
शुक्रक्षेत्रे तु सञ्जातः कृशाङ्गेन वर्तुलाङ्गधृक् ॥ ७ ॥
सुखस्पृहस्तिरः केशश्शुक्रसारो हि भार्गवः ।
पित्रोः शुश्रुषो धन्यस्तेजस्वी सत्यवाग्भवेत् ॥ ८ ॥
मृगार्द्धार्द्रापुनर्वस्वास्त्रिपादं मिथुनं भवेत् ।
बुधक्षेत्रेऽत्र जातस्तु महाप्राज्ञो जनप्रियः ॥ ९ ॥
दृढ़व्रतस्स्थूलकायो योषिद्रति कुतुहलः ।
त्रिस्थूलो मज्जयासारो बुधो मध्यस्वरूपतः ॥ १० ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

कृत्तिका के अन्तिम तीन पाद, रोहिणी और मृगशिरा के प्रथम दो पाद की वृष राशि होती है । इस लग्न में यदि शुक्र स्थिर हो तो जातक (उत्पन्न सन्तान) दुर्बल, गोल चेहरे वाला, सुख की इच्छा रखने वाला, खड़े बालों वाला, शक्तिशाली, माता-पिता की सेवा करने वाला, धन्यवाद का पात्र तेजस्वी तथा सत्य बोलने वाला होता है ॥ ७–८ ॥

मृगशिरा का आधा पाद, आर्द्रा, पुनर्वसु के तीन पाद की मिथुन राशि होती है । यदि (मिथुन) लग्न के क्षेत्र में बुध स्थित हो तो जातक महान् प्रज्ञावान् तथा लोकरञ्जक जनता का प्रिय होता है । उसमें दृढ़ता स्थूलता महिलाओं के प्रति अनुरक्ति रखने वाला गुण, कुतुहल करने वाला, तीन स्थलों से स्थूल (मन्द) मज्जा से युक्त और मध्यम स्वरूप (क्रान्ति) वाला होता है ॥ ९–१० ॥

पादमेकं पुनर्वस्वाः पुष्य श्लेषान्तकर्क्वजः ।
चन्द्रक्षेत्रे हि सर्वज्ञः सर्वकार्यप्रवर्तकः ॥ ११ ॥
सुशीलो गुरुभक्तश्च धनधान्यसमन्वितः ।
रक्तश्लथो मृदुर्गौरश्चञ्चलः पटुवाक्कविः ॥ १२ ॥
मघापूर्वोत्तरापादस्यैकं सिंहो भावेत्खलु !
सूर्यक्षेत्रेऽत्रजातस्तु पिङ्गलोनेत्रतो धनी ॥ १३ ॥
पैत्तिकस्स्थूल शल्यश्च दीर्घायुर्व्याधि वर्जितः ।
वलवान् सूक्ष्मभोगी च दयालुरिति संस्मृतः ॥ १४ ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

पुनर्वसु नक्षत्र का एक पाद, पुष्य और श्लेषा नक्षत्र की कर्क राशि होती है। यदि चन्द्रमा कर्क के गृह (क्षेत्र) में हो तो जातक सर्वज्ञ तथा सभी नये कार्यों का प्रवर्तक होता है ॥ ११ ॥

वह (जातक , सुशील, गुरु में भक्ति रखने वाला, धन और अन्न वस्त्रादि से सम्पन्न, लाल वर्णवाला, मृदुल, गोरा, चञ्चल, वाक् पटु, वकील अथवा कवि होता है ॥ १२ ॥

मघा, पूर्वा फाल्गुनी तथा उत्तरा फाल्गुनी के एक चरण की सिह राशि होती है। सिंह राशि में सूर्य स्थिर हो तो जातक पिङ्गल (पीत) वर्णवाला और लुभावने नयन वाला होता है ॥ १३ ॥

उसमें पित्तज प्रकृति, स्थूलता, कष्टद, लम्बी आयु, व्याधि का अभाव, बल, सूक्ष्मदर्शिता, भोग विलास, दया आदि भाव रहते है ॥ १४ ॥

उत्तरायास्त्रयः पादा हस्तचित्रार्द्धं कन्यका ।
बुधक्षेत्रेऽत्र जातस्तु दरिद्रो नीतिवर्जितः ॥ १५ ॥
चित्रार्द्धेन तथा स्वाती विशाखा त्रिपदं तुला ।
शुक्रक्षेत्रे भवेद्यस्तु मानदो धर्मवत्सलः ॥ १६ ॥
विशाखैकं चानुराधा ज्येष्ठान्ते वृश्चिको भवेत् ।
भौमक्षेत्रे तु सञ्जातो धर्मवादी सुखी प्रभुः ॥ १७ ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

उत्तरा के तीन पाद, हस्त तथा चित्रा के दो पाद की कन्या राशि होती है। कन्या राशि में बुध हो तो जातक दरिद्र तथा नीति से अनभिज्ञ यानी नैतिकता को न समझने वाला होता है ॥ १५ ॥

चित्रा के शेष दो पाद, स्वाती तथा विशाखा के तीन पाद की तुला राशि होती है। तुला के घर में शुक्र के स्थिर रहने पर उत्पन्न सन्तान सम्मान शाली, धर्म में अनुराग रखने वाला होता है ॥ १६ ॥

विशाखा का एक पाद, अनुराधा तथा ज्येष्ठा की वृश्चिक राशि होती है। इस राशि में स्थित भौम क्षेत्र में उत्पन्न जातक, धर्म को बताने वाला, सुखी जीवन व्यतीत करने वाला, तथा प्रभावशाली (प्रभुता के गुणों को धारण करने वाला) होता है ॥ १७ ॥

मूलं पूर्वोत्तराषाढा पादमेकं धनुर्भवेत् ।
गुरुक्षेत्रे सुजातस्तु सभायां बर्बरो भवेत् ॥ १८ ॥
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो बुद्धिसारो निरामयः ।
मधुनेत्रः कफाधिक्यो गौरो वाक्यतिरीरितः ॥ १९ ॥
पादत्रयोत्तराषाढ़ श्रवणोर्द्धं धनिष्ठया ।
मकरस्तु शनेः क्षेत्रं तत्र जातो भवेन्नरः ॥ २० ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

मूल पूर्वाषाढा तथा उत्तराषाढा के एक पाद की धनु राशि होती है। इस राशि में बृहस्पति स्थित हो तो जातक सभा में तेज तर्राक स्वरूप वाला होता है ॥ १८ ॥

ऐसा जातक सभी शास्त्रों के तत्त्व को जानने वाला, प्रबल बुद्धि वाला (बुद्धिमान) रोग से रहित, लुभावने नेत्र वाला, कफ प्रकृतिक, गौर वर्ण तथा वाक्य तत्त्व का विश्लेषण करने वाला होता है ॥ १९ ॥

उत्तराषाढ़ा के तीन पाद, श्रवण तथा धनिष्ठा के दो पाद की मकर राशि होती है। मकर राशि में शनि की स्थिति रहने पर उत्पन्न होने वाला जातक, अधिक सन्तान वाला, धर्मज्ञ (धर्म को जानने मानने वाला) साहसी (चोरी, डकैती कत्ल आदि करके भी पीछे न हटने वाला) होता है। शनि

वहुप्रजश्चधर्मज्ञस्साहसिक्यो न संशयः ।
कृशो दीर्घस्स्नायुसारस्स्थूलदन्तश्शनैश्चरः ॥ २१ ॥
अन्यदर्द्ध शतसम्पूर्णं भाद्रपादत्रयं घटः ।
शनिक्षेत्रेऽत्र जातस्तु देवब्राह्मणपूजकः ॥ २२ ॥
पूर्वभाद्रैकपादन्तु शेषं मीनो भवेत्खलु ।
गुरुक्षेत्रेऽत्र धर्मज्ञः सुखी मानी जनप्रियः ॥ २३ ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

के प्रभाव से वह कृश शरीर वाला, लम्बा, स्नायुवान्, मोटे तथा चपटे दाँत वाला तथा धीरे-धीरे चलने वाला होता है ॥ २०–२१ ॥

धनिष्ठा के शेष दो पाद, शतभिष् तथा पूर्वा भाद्रपद् के तीन चरणों की कुम्भ राशि होती है । कुम्भराशि में शनिश्चर का क्षेत्राधिकार रहे तो जातक (उत्पन्न होने वाली सन्तान) देवताओं की और ब्राह्मणों की पूजा तथा सम्मान करने वाला होता है ॥ २२ ॥

पूर्वाभाद्र पद का एक चरण, उत्तराभाद्र पद तथा रेवती की मीन राशि होती है । मीन राशि में स्थित वृहस्पति के क्षेत्र में सन्तान उत्पन्न हो तो वह धर्म को जानने मानने वाला, सुखी जीवन व्यतीत करने वाला, सम्मान बनाये रखने वाला, तथा जनता में लोकनायक वनकर लोकप्रिय वनने वाला होता है ॥ २३ ॥

तनुर्द्धनं च सहजं सुहृत्सुतरिपूस्तथा।
जायामृत्युश्च धर्मश्च कर्मचायव्ययौ विदुः ॥ २४ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

नन्वस्तुराश्यधिपैस्तथाफलं लग्नोऽपि तैस्तु कथं तत्कल्पनीयम्। तदाह--तनुरीति। तद्यथा--

दुश्चिक्यं स्यात्तृतीये तु सुखं सप्तचतुर्थके।
बन्धु संज्ञं च पातालं हिबुकं पञ्चमे च धीः ॥ १ ॥
द्यूनं द्यूनमथास्तञ्च यामित्रं सप्तमे स्मृतम्।
दशमे त्वम्बरं मध्यं छिद्रं स्यादष्टमे गृहे ॥ २ ॥

नन्वेतेषां लग्नानां मेषादिक्रमेण तत्तन्नवांशायां प्रश्ने किं स्वरुपमिति निदर्शयितुमाह--मेषे रक्तमिति। अन्यच्च--

मासेतु शुक्ले प्रतिपत्प्रवृतेः पूर्वं शशीमध्यतलोदशाहे,
पूर्णे द्वितीयेऽल्पबलस्तृतीये सौम्येन दृष्टो बलवान्सदैव।
लग्ने स्थितः पूर्णतनुः शशाङ्को जीवेनदृष्टो यदि वा सितेन,
क्षिप्रं प्रनष्टस्य करोति लाभं लाभोपजातो बलवांच्छुभश्च ॥

इत्यादि बहुशोऽन्यत्र।

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

तनु, धन, सहज सुहृद, सुत, रिपु, जाया, मृत्यु, धर्म, कर्म, आय, व्यय ये बारह राशि (लग्न) के भाव है ॥ २४ ॥

मेषे रक्तं वृषे पीतं मिथुने नीलवर्णकम् ।
कर्क्के च पाण्डुरं ज्ञेयं सिंहे धूम्रप्रकीर्तितम् ॥ २५ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

रुद्रे भद्रं च लाभं च वलश्च सोदशकेन्द्रकम् ।
व्ययं रिष्फूं द्वादशे च त्रिकोणं नवपञ्चमे ॥ ३ ॥
त्रिषष्ठदशलाभानां भवेदुपचयाख्यकम् ।
लग्नश्चांसो दशमश्च कण्टकञ्च चतुष्टयम् ॥ ४ ॥
चतुर्थाष्टमयोस्संज्ञा चतुरस्त्रं स्मृतो बुधैः ।
अतस्तदूर्द्धं फलं प्रोक्तं वेदितव्यं वहुश्रुतैः ॥ ५ ॥
सहजे सहजाधीशो लग्ने पुत्रो धनेऽपि वा ।
जायते न तदा वालो यदि जातो न जीवति ॥ ६ ॥
चन्द्रमङ्गलसंयोगो जन्मकाले यदा भवेत् ।
तस्य जातस्य गेहे तु लक्ष्मी नैव विमुञ्चति ॥ ७ ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

तनु आदि भावों का मेषादि लग्नों के साथ उनके नवांशों में जो स्वरुप होते है उनको इस प्रकार वताया गया है—मेष लग्न में लाल, वृष में पीला, मिथुन में नील, कर्क में पाण्डूर (पीत शुभ्र) तथा सिंह में धूम्र वर्ण का वताया गया है ॥ २५ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

भ्रातृस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने यदा शशी ।
स बालो लोकमध्ये तु जायते कुलदीपकः ॥ ८ ॥
लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्रियं हरति भर्त्ता च पतिं भार्या विनाशयेत् ॥ ९ ॥
एकोऽपि यदि केन्द्रस्थो बुधो जीवो बली भृगुः ।
जायते तत्र बालस्तु धनाढ्यो वेदपारगः ॥ १० ॥
सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने स्थितः सितः ।
निरन्तरं ग्रहा मध्ये राजा भवति निश्चितम् ॥ ११ ॥
लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ ।
कर्मस्थाने भवेद् भौमो जातो राजाऽत्र जायते ॥ १२ ॥
लग्ने क्रूरो व्यये सौम्यो धने क्रूरश्च चेद्भवेत् ।
राजयोगोऽत्र राजा स्याद् दाता दारिद्रभाक्तदा ॥ १३ ॥
अष्टमस्था यदा क्रूराः सौम्या लग्ने स्थिता ग्रहाः ।
ध्वजयो गोत्रयो जातः स पुमान्नायको भवेत् ॥ १४ ॥
केन्द्रे चोच्चास्थिते सौम्ये राजलक्ष्मीपतिर्भवेत् ।
केन्द्रे पापे चोच्चसंस्थे राजा स्याद् दुहिता गृहे ॥ १५ ॥
तुङ्गस्थेव बुधे लग्ने लाभस्थाने पुरोहितः ।
अत्र जाता नरेन्द्रस्य पत्नी भवति भूतले ॥ १६ ॥
स्त्रीपुंसयोः फलन्तुल्यं जायते किन्तु सप्तमे ।
सौभाग्यं चन्द्रलग्नाभ्यामष्टमाद् भर्तृनाशनम् ॥ १७ ॥

इत्यादि बहुशोऽन्यत्र विस्तरः ।

कन्यायां नीलमिश्रं स्यात्तुलायाम्पीतमिश्रितम् ।
वृश्चिके ताम्रमिश्रं स्याच्चापे पीतं विनिश्चितम् ॥ २६ ॥
नक्रे कुम्भे कृष्णवर्णं मीने पीतं वदेत्सुधीः ।
इत्यादि मुष्टिप्रश्नस्य मनस्त्वग्निमुत्तरम् ॥ २७ ॥
मेषे च द्विपदा चिन्ता वृषे चिन्ता चतुष्पदा ।
मिथुने गर्भचिन्ता स्याद् व्यवसायश्च कर्क्कटे ॥ २८ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

एवं मुष्टिप्रश्नाभिप्रायेणोक्त्वा मनोविषयत्वेनाप्युत्तरं सामान्यरूपेणाह-मेषे चेति । अन्यच्च--

धातुं मूलं जीवमित्योज राशौ युग्मे विद्या द्विषमे वैपरीत्यम् ।
लग्ने योंशस्तत्क्रमाद् दण्डमेव संक्षेपोऽयं विस्तरात्तत्प्रभेदः ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

कन्या लग्न में नीलाभ, तुला में पीला मिश्रित (पीताभ) वृश्चिक में ताम्राभ, धनु में पीत, मकर और कुम्भ में कृष्णवर्ण, मीन में पीतवर्ण विद्वानों ने नवमांशो का स्वरूप निर्दिष्ट किया है । वस्तुतः ये वर्ण मुष्टि प्रश्न से सम्बन्धित है । मानस आदि का व्याख्यान इसके आगे बताया जायेगा ॥२६–२७॥

मानसादि विधानों में मेष राशि में द्विपद, वृष में चतुष्पद, मिथुन में गर्भ चिन्ता, कर्क में व्यवसाय चिन्ता, सिंह में जीव चिन्ता, कन्या में स्त्री चिन्ता,

सिंहे च जीवचिन्ता स्यात् कन्यायाञ्च स्त्रियस्तथा ।
तुलायां धनचिन्ता स्याद् व्याधिचिन्ता च वृश्चिके ॥२९॥
चापेऽपि धनचिन्ता स्यान्मकरे शत्रुचिन्तनम् ।
कुम्भे स्थानस्य चिन्ता स्यान्मीने चिन्ता च दैविका ॥३०॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

स्वांशे विलग्ने यदि वा त्रिकोणे स्वांशे स्थितः पश्यति धातुचिन्ताम् ।
परांशकस्थश्च करोति मूलं जीवं परांशोपगतः परांशम् ॥

एवञ्च सामान्यरूपेण फलमनुसन्धेयं विशेषस्तु देवप्रासादादेवेति ज्ञातव्यम् ॥ ३० ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

तुला में धन, वृश्चिक में व्याधि, धनु में धन, मकर में शत्रु, कुम्भ में स्थान (पद प्रतिष्ठा) मीन में दैवी आपदा की चिन्ता करनी चाहिये। अर्थात् इन्हीं फलों का अनुमान करना चाहिये। विशेष फल तो वस्तुतः देवताओं की प्रसन्नता से मिलते देखे जाते हैं ॥ २८–३० ॥

धनुर्मेषे च सिंहे च मेषाद्याः क्रमतो नव।
वृषे मकरे कन्यायां मकराद्याः क्रमात्पुनः॥ ३१ ॥
कुम्भेऽथ मिथुने चैव तुलायां ते तुलादयः।
कर्के च वृश्चिके मीने कर्काद्यैस्तन्नवांशकम्॥ ३२ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

नन्विह तावज्जन्मनः प्रश्नस्य वा तत्तत्फलाभिव्यञ्जकप्रायो
वांशा एव तेषाञ्च शास्त्रतो मेषादिना तुलादिना कर्कादिनैवं विधि-
रिति श्लोकद्वयेन परिष्कुर्वन्नाह—धनुरिति। एवन्तर्हि धनुर्मेषसिंहानां
ष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक धनुरित्येवं
मेण भवति। एवं वृष, मकर, कन्यायाम्, मकर कुम्भ, मीन, मेष,
, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिकेत्येवं क्रमेण। तथा
म्भ मिथुनतुलानां तुलादयः एवं कर्क वृश्चिकमीनानां कर्कादयो
द्याः॥ ३२ ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

इस प्रकार धनु मेष सिंह आदि राशियों का मेष-वृष-मिथुन-कर्क-सिंह-
या-तुला-वृश्चिक इस क्रम से भोग काल होते है। मेष-मकर-कन्या राशियों
मकर-कुम्भ-मीन-मेष-वृष-मिथुन-कर्क-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक राशियों के
क्रम से भोग काल होते है। इसी प्रकार कुम्भ-मिथुन-तुला का तुलादि
और कर्क वृश्चिक-मीन का कर्कादि में क्रम से नवांश भोग काल होते हैं॥

मेषे मीने त्रिदण्डं स्याद् वृषे कुम्भे चतुष्टयम् ।
मिथुनादि मृगान्ते स्याद् दण्डैः पञ्चैव कीर्तिताः ॥ ३३ ॥

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मी
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	
४१	१३	४	४२	४५	३५	३५	४५	४२	४	१३	४

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

मेष मीन में तीन दण्ड, वृष और कुम्भ में चार दण्ड, मिथुन आदि मकरान्त राशियों का भोग काल पांच दण्ड कहा गया है ॥ ३३ ॥

लग्नों का उपभोग काल इस सारिणी से स्पष्ट होता है—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मी
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	
४१	१३	४	४२	४५	३५	३५	४५	४२	४२	१३	४

एकद्विपञ्चकैर्युग्मे मेषमीककर्कचापसिंहवृश्चिके ।

चत्वारिंशद्युते पञ्चत्रिंशद्विश्वागमात्पलैः ॥ ३४ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

ननु तावत्कतिदण्डैस्तेषां लग्नानां भोगो यत्र नवांशांविधिरुक्त इत्यभिप्रत्याह—**मेषे मीन इति**। एवं सतीह मेष इत्यादिना तल्लग्नानां दण्डैर्भोगमुक्त्वा तत्र फलाधिक्यन्त्वाह—

एकद्विपञ्चकैरिति । तत्र तावन्मेषमीनयोः कर्कधनुषोः वृश्चिक-सिंहयोरित्येवं क्रमेण युग्मे युग्मत्वेकचत्वारिंशद्द्विचत्वारिंशपंचचत्वा-रिंशत्पलैः पूर्वोक्त दण्डैश्च स्वरुपभोगो व्याख्येयः । एवमृते शेषे कन्या-तुलयोर्वृषकुम्भयोः मिथुनमकरयोरित्येवं क्रमेण युग्मे युग्मे पञ्चत्रिंशत् त्रयोदश चतुः पलैः पूर्वोक्त तदीयदण्डैः सह एषां यथोक्तलग्नानां भोग इत्यवधार्यम् ॥ ३४ ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

मेष और मीन युग्म में एकतालिस पल, कर्क और धनुष के युग्म में ४२ पल तथा सिंह और वृश्चिक के युग्म में ४५ पल का अधिक भोग काल समझा जावे ॥ ३४ ॥

वृषे मकर कुम्भे तु विश्वजा मिथुने धने ।
चत्वारि पञ्च त्रिंशत्तु कन्यायां तौलिके न्यसेत् ॥ ३५ ॥
मेषे मीने चतुर्विंशत्यर्द्धाधिक्यपलैर्भुजिः ।
वृषे तु मकरे कुम्भे चाष्टाविंशतिकाः पला ॥ ३६ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

नन्वेवमपि मेषादि नवांशायां कतिभिः कतिभिरवान्तरो भोगः इत्याह—वृषे मकरेति तथा चेह वृष इत्यादिक्रमेण त्रिषु विश्वजाः

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

कन्या और तुला में ३५ पल, वृष कुम्भ में १३ पल, तथा मिथुन और मकर में ४ पल का भोग काल जाना जावे । वृष, मकर, कुम्भ इन तीन विश्वज नक्षत्रों के आठ[1] पल का, मिथुन और धनु का पाँच पल का तथा कन्या और तुला के तीस पल का भोग काल समझा जावे ।

मेष और मीन राशि में ३६ पल का नवांश भोग काल होता है । वृष, मकर और कुम्भ में २८ पल का भोग काल बताया गया है ॥ ३६ ॥

1. वृषे तु मकरे कुम्भे चाष्टौ सार्धेन संशयः । श्लोक—४० द्रष्टव्यः ।
शेषे कन्यातुलयोस्तुथा च वृषकुम्भयो ।
चतुर्मिथुनझषयोः पञ्चत्रिंशत् त्रयोदशः ॥

मिथुने धनौ त्रयस्त्रिंशत्कर्केऽथ वृश्चिके पलाः ।
अष्टत्रिंशत्तथा सिंहे पञ्चत्रिंशत्पलास्स्मृताः ॥ ३७ ॥
कन्या तुला चतुस्त्रिंशन्नवांशायां भुजिर्भवेत् ।
शेषरसंधिर्विवेक्तव्यं फलम्प्रश्ने ग्रहाधिपैः ॥ ३८ ॥

॥ इन्दु-सस्कृत-व्याख्या ॥

अष्टौ पलाः इत्यादिक्रमेणाग्रेऽपि यथासङ्ख्यक्रमेण विवेकः । सः सन्धिरिति । तत्र सन्धौ पापैः क्लेशश्शुभौ शुभमिश्रितैर्मध्यमफलमिति तत्तद्‌ंशस्वभावेन बोध्यम् ॥ ३८ ॥

इदानीन्तत्तल्लग्नप्रतिपत्यर्थं यत्नमाह– स्योदयदिति । तत्र तावत् संक्रान्तिक्रमेण स्वोदयात्सप्तमे लग्ने पादोनरखेतिन्यायेन । तथा

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

मिथुन, धनु राशि में ३३ पल कर्क और वृश्चिक में ३८ पल सिंह में ३५ पल का नवांश भोग काल वताया गया है ॥ ३७ ॥

कन्या और तुला का नवांश में ३४ पल का भोग काल होता है । शेष का भोग काल असन्धेय है । इस प्रक्रिया में प्रश्नों का फल ग्रह-स्वामियों के स्वभाव से समझमा उचित होगा ॥ ३८ ॥

सोदयात्सप्तमे चास्तं मध्याह्नं तच्चतुर्थके ।
रात्र्यर्द्धमुदयं चैव विद्याविज्ञैः समासतः ॥ ३९ ॥
मेषे मीने त्रिंशांशायां भागश्चाष्टौ पलैर्भवेत् ।
वृषे तु मकरे कुम्भे चाष्टौ सार्द्धेन संशयः ॥ ४० ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

सोदयाच्चतुर्थे मध्याह्नं स्वास्ताच्चतुर्थे चार्द्धरात्रमित्येवंक्रमेण लग्ने किंचित् न्यूनाधिक्येन कृत्वा विवेक्तव्यम् ॥ ३९ ॥

अधुना त्रिशाशायामपि क्रमेणभौम शनिगुरुबुधशुक्राणां पञ्च-पञ्चभागैरन्त्ये सर्वैश्च प्रत्येकं समराशिषु भोक्तृत्वं विषमेत्वं तत एवेति तानंशान्निर्णेतुं त्रिभिराह—**मेषे मीने** इति । उक्तं हि मदनरत्ने यथा—

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

उपरोक्त क्रम में सन्धि (संक्रान्ति) उदय से सप्तम, अस्त और मध्याह्न से चतुर्थ मानना चाहिये । अर्ध रात्रि के पश्चात् से ही उदय-काल मानना ज्योतिष शास्त्रज्ञों का मन्तव्य है ॥ ३९ ॥

जहाँ नवांश विधि अभिप्रेत होती है वहाँ मेष और मीन के त्रिंशांश में आठ पल का भोग काल समझा जाय । वृष मकर और कुम्भ का आठ के आधे के (द्विभाव के कारण) बराबर यानी चार पल भोग काल मानना संशयास्पद नहीं होगा ॥ ४० ॥

मियश्चापेतु दिङ्सांख्यैः पादोनैरसापलैर्भवेत् ।
कर्कं च वृश्चिके चेष्टा द्वादशद्वादशैव हि ॥ ४१ ॥
सिंहे चैकादशप्रोक्ता कन्यायां तौलिके तथा ।
सन्धिश्शेषैस्समाख्यातः पलांशैर्नात्र संशयः ॥ ४२ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

भौमश्शनिर्गुरुश्चैव बुधशुक्रोऽथ पञ्चमः ।
भागैः पञ्चभिराख्यातास्त्वयुते तु विपर्ययात् ॥

तत्र तावन्मेषमिथुनसिंहतुला धनुःकुम्भानां विषमराशिनां मेषक्रमेण भौमादिभिः पञ्चपञ्चभागं भुज्यन्ते । एवं वृष कर्क कन्या वृश्चिक-मकरमीनानां समराशीनां विपर्ययेणान्त्यतः पञ्च शुक्रस्येत्यादि क्रमेण भागा भुज्यन्ते इति विवेकः । अधुनाराशीनां चरस्थिर द्विस्स्वभाव-विभागं पुंस्त्वस्त्रीत्वविभाग क्रूरसौम्यविभागं तत्तद्दिगपतित्वं च क्रमेण दर्शयति--चरेति । तत्र तावन्मेषश्चरो वृषास्थिरो मिथुनो द्विस्स्वभाव

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

चर स्थिर, दो प्रकार के लग्न होते हैं उसी क्रम से इनमें स्त्री पुरुष भेद भी मानना चाहिये । इनके क्रूर अक्रूर (सौम्य) भाव भी क्रमशः समझना चाहिये । ये लग्न पूर्व आदि दिशाओं में स्थिर है, जैसे, मेष सिंह धनु पू[र्व] में, वृष, कन्या, मकर दक्षिण में, मिथुन तुला कुम्भ पश्चिम में तथा क[र्क] वृश्चिक और मीन उत्तर में स्थित है । वृष, मिथुन, कर्क, धनु, मेष औ[र]

चरास्थिरौ द्विधा चैवं पुंस्त्री क्रूराक्रूरौ क्रमात् ।
पूर्वादौ दिशि तिष्ठन्ति मेषाद्या नवपञ्चमैः ॥ ४३ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

इत्येवं पर्यवसिते क्रमेण मेषकर्कतुलामकराश्चराः, वृषसिंहवृश्चिक कुम्भस्थिराः, मिथुनकन्या धनुर्मीनाः द्विस्स्वभावाः इति प्रश्ने जाते वा पथा स्वभावतः फलमप्यनुसन्धेयम् । एवम्मेषः क्रूरः पुरुषश्ववृषस्सौम्यस्स्त्री चेति क्रमेण विवेचिते क्रूरेषु जाताः, क्रूराः सौम्येषु जाता, सौम्यस्वभावाः पुंस्त्वस्त्रीत्वस्वभावाश्चेति फलम् बोध्यम् । तथा मेषवृषमिथुन कर्कराशयः स्वपञ्चमनवाभ्यां सहिताः पूर्वादिषु चतसृषु दिक्षु स्वामित्वेन क्रमात्तिष्ठन्तीति भावः । तेन मेषसिंहधन्विनः पूर्व-स्यां, वृषकन्यामकराः दक्षिणस्यां, मिथुनतुलाकुम्भाः पश्चिमायां कर्क-श्चिकमीनास्तूत्तरस्यां बलग्रहाहतनष्टादिदिग्विज्ञानं सूतिकागृहद्वारज्ञा-ञ्च इति फलमवधार्यम् । अधुनाराशीनां रात्रिदिनसंज्ञित्वं पृष्ठोदय शीर्षोदयसंज्ञित्वं च दर्शयति--मेषगवित्ति । एवन्तह्य ते मेषवृषकर्क-नुमकराख्याः पञ्चराशयो निशाख्याः पृष्टोदयाः चेत्यर्थः । एव शेषाः

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

कर ये राशियाँ रात्रि में बली है । मिथुन को छोड़ कर इन्हें पृष्ठोदय भी हते हैं । शेष (सिंह कन्या तुला वृश्चिक कुम्भ) ये राशियाँ दिन में बली । ये राशियाँ और मिथुन को शीर्षोदय कहते हैं । मीन को उभयोदय कहते

मेष गो कर्कधन्वी च मृगास्याः पृष्ठतो निशि।
शेषाश्शीर्षोदयाः काले मीने शस्तो द्विधास्पदः ॥४४॥
स्वगृहाद् दशमे पूर्णं त्रिभिस्तु नवपञ्चमे ।
द्विपादैर्वेद वसुके त्रिपादैस्सप्तमं भवेत् ॥ ४५ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

मिथुनसिंहकन्यातुलावृश्चिककुम्भाः शीर्षोदयाः दिनबलाश्च भवन्ति। तत्र मीनस्तु द्विधास्पद इतिवोध्यम् । तथा च मदनः--

शीर्षोदये समभिवाञ्छितकार्यसिद्धिः,
पृष्ठोदये विफलता जलवुद्धिनाशः।
शस्तं दिवादिनवले निशिनक्तकार्ये,
राशौविपर्ययबले गमनं न शस्तम् ॥ ४४ ॥

अधुना तत्तत्कार्यार्थं सूर्यादिग्रहाणां दृष्टिविचारं वक्तुमाह--स्वगृहदिति। तत्र तावद् यस्मिन् लग्ने जन्माभूत् प्रश्नो वा कृतः तत्स्वामिनः

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

हैं। इन लग्नों का उदय शीर्ष से होने पर शीर्षोदय और पृष्ठ से होने पर पृष्ठोदय कहलाता है ॥ ४४ ॥

जिस लग्न में जातक का जन्म हुआ हो अथवा प्रश्न हो, वहाँ उसके स्वामी अपने गृह स्थान से दशम में पूर्ण दृष्टि वाला, नौ, पांच, तीन, चार, आठ

रवि श्शुक्रोऽथ भौमश्च राह्वर्किश्चन्द्रमास्तथा।
बुधो बृहस्पतिश्चाष्टौ ग्रहापूर्वादितः क्रमात् ॥ ४६ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

स्वस्माद्गृहात् दशमे पूर्णदृष्टिः, नवपञ्चमेत्रिपदीचतुर्थेऽष्टमे द्विपदी सप्समे नीचस्थानेत्वेकपदी। तत्र क्रूरस्य सौम्यस्य वा दृष्टिर्गच्छताम् पृच्छताम् वा तत्तत्फलदात्रीत्यर्थः। तद्यथा--

च्युतिर्विलग्नाद्धिबुकाच्च वृद्धिम्मध्यात्प्रवासोस्तमयान्निवृत्तिः।
वाच्यङ्ग्रहैः प्रश्नविलग्नकालाच्छुभाशुभैः पूर्णतदर्द्धदृष्टेः ॥
पोयोभावस्स्वामिदृष्टोयुतो वा, सौम्यैर्वास्यात्तत्र तस्यास्तिवृद्धिः।
पापैरेवं तस्यभावस्य हानिर्विज्ञातव्या जन्मतः पृच्छतो वा ॥
स्थिरोदये जीवशनैश्चरेक्षिते गमागमौ नैव वदेत्तु पृच्छतः।
त्रिपञ्च षष्ठारिषु सङ्गमाप पापाश्चतुर्था विनिवर्त्तनाय ॥

इत्याद्यन्यत्र विस्तरः ॥ ४५ ॥

अधुना ग्रहाणां दिग्विशेष विषयकत्वेन स्वामित्वमाह--रविरिति।

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

दो सप्तम में नीच स्थानी होता है। वहाँ क्रूर तथा सौम्य की दृष्टि विचार से फल समझा जावे। आठ ग्रह रवि पूरब, शुक्र अग्नि, भौम दक्षिण, राहू नैऋत्य, शनिश्चर पच्छिम, चन्द्रमा वायव्य, बुध उत्तर, वृहस्पति ईशान के स्वामी है ॥ ४६ ॥

मेषो वृषस्तथा सिंहो धनुर्मपूर्वकरगः ।
चतुष्पद्दात्तु दशमे दक्षिणस्यां बलाग्रहाः ॥ ४७ ॥
मकरश्शेषोऽथ कर्कश्च कुम्भो मीनो जलप्रियः ।
चतुर्थे चोत्तरस्याम्बै बली प्रोक्तो निशामयम् ॥ ४८ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

तत्र तावद्रविः सूर्यः पूर्वस्थां शुक्रोऽग्नौ, भौमो दक्षिणस्याम्, राहुर्नैऋत्याम् अर्किः शनिश्चरैः प्रतीच्यामित्यादिक्रमेण विवेक्तव्यम् ॥ ४६ ॥

इदानीं राशीनां च दिग्विशेषविषयत्वेन फलविशेषप्रदत्त्वप्रतिपत्यर्थमाह--मेषो वृष इति। तत्र तावन्मेषादयः पञ्चपूर्वगा अपि

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

मेष, वृष, सिंह, धनु मकर ये पांचों राशियां पूर्वगामी होते हुए भी चतुष्पद होती हुई पुरुष के लग्न के स्थान से दशम में हो इनका बलाग्रह दक्षिण दिशा समझना चाहिए तथा इनके लग्न स्वभाव के अनुसार फल समझना उचित होगा ॥ ४७ ॥

मकर, वृश्चिक, कर्क, कुम्भ, मीन ये राशियां जलप्रिय है ये राशियां

मिथस्तुला च कन्या च धनुर्पूर्वाद्धतो नरः ।
प्राच्यां दिशि विलग्ने च बली प्रोक्तो न संशयः ॥४६॥
वृश्चिकस्य धनस्याथ पूर्वाद्धसर्प इष्यते ।
पश्चिमे सप्तमे स्थाने बलवानिति संस्मृतः ॥ ५० ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

चतुष्पदाः पुरुषस्य लग्नतो दशमे स्थाने चेत्स्युस्तदा दक्षिणस्यां बलग्रहाः बोध्याः । एवमग्रेऽपि यथायथं लग्नस्वभावतः फलवैचित्र्यं विवेक्तव्यमिति, विशेषोऽन्यत्र विस्तरः ।

अधुना कृतस्य शास्त्रस्य फलांशेन साफल्यं दर्शयन् समापयति--

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

लग्न से चतुर्थ स्थान में होने से निशाश्रयी होती है और बली होकर उत्तरोत्तर फल देने वाली होती हैं ॥ ४८ ॥

मिथुन तुला, कन्या, धनु पूर्व के आधे भाग से नर संज्ञक होती हैं और ये यदि पूरब दिशाश्रयी हो तो बली होकर अच्छा फल देती है, इसमें कोई सन्देह नही है ॥ ४९ ॥

वृश्चिक धनु पूर्वार्द्ध के आधे भाग को स्त्री संज्ञक कहते हैं ये सप्तय

इति गदितनिबद्धमत्र चाक्षुषफलं हि,
कथितमिदमपूर्वं ज्योतिषां सारभूतम् ।
न खलु किमपि वेद्यं स्यात्तु शास्त्रेऽत्र वेद्ये,
यदिह फलसमेतैराद्दतज्वेन्मनोभिः ॥ ५१ ॥

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

इति गदितमिति। उक्तं हि--इत्याद्यर्थे समाप्तौ च विपर्य्यासमसत्कृतेऽपि च तथानेकव्यवस्थाऽर्थे निपातत्वात् समीरितमिति बोध्यम् ।

तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगश्च करणन्तथा ।
लग्नश्चेत्यादिके मुख्यो लग्नयोगोऽत्र दर्शितः ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

स्थानी होकर पश्चिम दिशाश्रयी होती है तो बली होकर अच्छा फल देती है ॥ ५० ॥

इस प्रकार मैं इस वेद चक्षु स्वरुप को निबद्ध कर कहता हूँ यह ज्योतिष शास्त्र का सारभूत और अपूर्व अंश हैं। इसके अनुसार शास्त्र में विचार करने पर कोइं भी वस्तु अज्ञात नहीं रहती अर्थात् सबका विचार और फल

॥ इन्दु-संस्कृत-व्याख्या ॥

लग्नादस्तोदयज्ञानं लग्नाज्जन्मविनिश्चयः ।
तस्मात्सर्वार्थसिध्यर्थं लग्नमादौ विचिन्तयेत् ॥

इति विस्तरादुपरम्यदिति शिवम् ।

इति डॉ० इन्दुनाथ शर्म कृतस्य चाक्षुषफलस्य इन्दु नाम्नि संस्कृत व्याख्या सम्पूर्णतामगात् ॥

॥ शशि हिन्दी व्याख्या ॥

प्राप्त हो जाता है। अतः इसका मनवृत्ति से आदर करना विशेप फलदायक सिद्ध होगा ॥ ५१ ॥

॥ श्रीमति शशिकला शर्मा कृत शशि हिन्दी व्याख्या समाप्त ॥

श्लोकानुक्रमणिका

डॉ० इन्दुनाथ शर्मा ज्यो० आ०

शशीन्दु कुटीर

जे. ११/४४ ए नईबस्ती, ईश्वरगंगी

वाराणसी